5/12/18

[This question paper contains 2 printed pages.]

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

Your Roll No..............

**Sr. No. of Question Paper : 7512**

IC

Unique Paper Code : 12051301

Name of the Paper : Hindi Sahitya Ka Itihas (Aadhunik Kaal)

Name of the Course : **B.A. (Hons) Hindi – CBCS**

Semester : III

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक : 75

## छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. नवजागरण के संदर्भ में भारतेंदु युगीन साहित्य पर प्रकाश डालिए।

**अथवा**

हिंदी पत्रकारिता और खड़ी बोली आंदोलन में महावीर प्रसाद द्विवेदी की भूमिका को स्पष्ट कीजिए। (15)

2. हिंदी कहानी की विकास-यात्रा का विवेचन कीजिए।

**अथवा**

हिंदी निबंध की विकास-यात्रा का परिचय दीजिए। (15)

3. उत्तर छायावादी काव्य की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।

**अथवा**

प्रयोगवादी काव्य की विशेषताएँ लिखिए। (15)

4. समकालीन कविता की मुख्य विशेषताओं की विवेचना कीजिए।

**अथवा**

'दलित विमर्श सांस्कृतिक पराधीनता से मुक्ति के विकल्प की बात करता है'- सोदाहरण विश्लेषण कीजिए। (15)

5. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए: (8,7)

(क) मध्यकालीन बोध

(ख) हिंदी नाटक

(ग) प्रगतिवाद

(घ) स्त्री विमर्श

This question paper contains 4 printed pages.]

DEENBANDHU COLLEGE 2018 LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

**Your Roll No..............**

**Sr. No. of Question Paper : 7513** **IC**

Unique Paper Code : 12051302

Name of the Paper : हिन्दी कविता (आधुनिक काल–छायावाद तक)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – CBCS**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

**छात्रों के लिए निर्देश**

इस प्रश्न–पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

निम्नलिखित में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) स्वयं सुसज्जित करके क्षण में,
प्रियतम को, प्राणों के पण में,
हमीं भेज देती हैं रण में,–
क्षात्र धर्म के नाते।
सखी, वे मुझसे कहकर जाते

**अथवा**

P.T.O.

अब नहीं आती पुलिन पर प्रियतमा,
श्याम तृण पर बैठने को, निरुपमा।
बह रही है हृदय पर केवल अमा,
मैं अलक्षित हूँ, यही
कब कह गया है। (8)

(ख) मित्रता बड़ा अनमोल रतना कब इसे तोल सकता है धन।
धरती की तो है क्या बिसात, आ जाए अगर बैकुण्ठ हाथ,
उसको भी न्यौछावर कर दूँ, कुरुपति के चरणों पर धर दूँ।

**अथवा**

यह सुख कैसा शासन का ?
शासन रे मानव मन का !
गिरी-भार बना-सा तिनका,
यह घटाटोप दो दिन का-
फिर रवि-शशि-किरणों का प्रसंग !
जलता है यह जीवन - पतंग ! (7)

2. 'यशोधरा' के विरह-वर्णन पर विचार कीजिए।

**अथवा**

यशोधरा की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। (12)

3. 'अशोक की चिन्ता' कविता की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।



**अथवा**

जयशंकर प्रसाद की काव्यगत विशेषताओं का विवेचन कीजिए। (12)

4. पाठ्यक्रम में निर्धारित कविताओं के आधार पर निराला की सामाजिक चेतना को स्पष्ट कीजिए।

**अथवा**

निराला की काव्यभाषा का विवेचन कीजिए। (12)

5. दिनकर ओज, औदात्य एवं वीर रस के कवि हैं। विचार कीजिए।

**अथवा**

सुभद्रा कुमारी चौहान की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (12)

6. दिए गए निर्देशों के आधार पर निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं **दो** का रचना-कौशल स्पष्ट कीजिए :

जलने को ही स्नेह बना। **(निर्देश - प्रेम - पीड़ा)**
उठने को ही वाष्प बना है,
गिरने को ही मेह बना।
जलता स्नेह जलावेगा ही,
फोले वाष्प फलावेगा ही,
मिट्टी मेह गलावेगा ही,
सब सहने को देह बना !
जलने को ही स्नेह बना !

अथवा

मुक्ति जल की वह शीतल बाढ़, जगत की ज्वाला करती शांत।

**(निर्देश – बौद्ध दर्शन)**

तिमिर का हरने को दुख भार, तेज अमिताभ अलौकिक कांत।
देव कर से पीड़ित विक्षुब्ध, प्राणियों से कह उठा पुकार-
तोड़ सकते हो तुम भव-बंध, तुम्हें है यह पूरा अधिकार।

अथवा

वीरों का कैसा हो बसंत ? **(निर्देश – भाव सौन्दर्य)**
आ रही हिमालय से पुकार,
है उदधि गरजता बार-बार
प्राची, पश्चिम, भू, नभ अपार,
सब पूछ रहे हैं, दिग्-दिगंत,
वीरों का कैसा हो बसंत ?

(6,6)

14/12/18

[This question paper contains 4 printed pages.]

**Your Roll No...............**

Deshbandhu College LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

**Sr. No. of Question Paper : 7514** **IC**

Unique Paper Code : 12051303

Name of the Paper : Hindi Kahani

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – CBCS**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न–पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. **सभी प्रश्न** अनिवार्य हैं।

1. शिल्प की दृष्टि से 'उसने कहा था' कहानी की समीक्षा कीजिए। (12)

**अथवा**

'छोटा जादूगर' कहानी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

2. 'पाजेब' बाल मन की कहानी है – विश्लेषण कीजिए।

**अथवा**

'तीसरी कसम' कहानी के प्रतिपाद्य का युक्तियुक्त विवेचन कीजिए। (12)

3. 'परिंदे' कहानी की लतिका का चरित्र चित्रण कीजिए। (12)

**अथवा**

'दोपहर का भोजन' कहानी की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

4. 'जंगल जातकम' एक प्रतीकात्मक कहानी है - स्पष्ट कीजिए। (12)

**अथवा**

शिल्प की दृष्टि से 'घुसपैठिए' कहानी का विश्लेषण कीजिए।

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (9×3=27)

(क) लड़ाई के समय चाँद निकल आया था. ऐसा चाँद जिसके प्रकाश से संस्कृत कवियों का दिया हुआ 'क्षयी' नाम सार्थक होता है। और हवा ऐसी चल रही थी जैसी बाणभट्ट की भाषा में 'दंतवीणोपदेशाचार्य' कहलाती। वजीरा सिंह कह रहा था कि कैसे मन-मन भर फ्रांस की भूमि मेरे बूटों से चिपक रही थी, जब मैं दौड़ा-दौड़ा पीछे गया था। सूबेदार, लहनासिंह से सारा हाल सुन और कागजात पाकर उसकी तुरंत बुद्धि को सराह रहे थे कि तू न होता तो आज सब मारे जाते।

**अथवा**

मुन्नी उसके पास से दूर हट गई और आँखे तरेरती हुई बोली - कर चुके दूसरा उपाय ? जरा सुनूं कौन उपाय करोगे ? कोई खैरात दे देगा कम्मल ? न जाने कितनी बाकी है, जो किसी तरह चुकाने में ही नहीं



आती. मैं कहती हूँ, तुम क्यों नहीं खेती छोड़ देते ? मर-मर कर काम करो, उपज हो तो बाकी दे दो, चलो छुट्टी हुई। बाकी चुकाने के लिए ही तो हमारा जन्म हुआ है। पेट के लिए मजूरी करो। ऐसी खेती से बाज आए। मैं रूपए न दूंगी- न दूंगी।

(ख) पेड़ बड़े उद्विग्न मन से सिर झुकाए तालाब की तरफ चले। वे खेमों के पास पहुंचे ही थे कि उन्हें सन्नाटे को तोड़ती हुई एक चीख सुनाई पड़ी - "बहादुरों ! यही वह बस्ती है जिसे हमें उजाड़ना है, खत्म करना है। हमें मनुष्यों के लिए मिल खड़ी करनी है, कारखाने बनाने हैं, कोयलों की खान खोदनी है। ये निहत्थे पेड़, झाड-झंखाड़ ! इनके लम्बे-चौड़े आकार से डरने की जरूरत नहीं। हमें जल्दी ही इनके वजूद को मिटा देना है...."

**अथवा**

शाहनी चौंक पड़ी। देर - मेरे घर में मुझे देर ! आंसुओं की भंवर में न जाने कहाँ से विद्रोह उमड़ पडा। मैं पुरखों के इस बड़े घर की रानी और वह मेरे अन्न पर पले हुए... नहीं, यह सब कुछ नहीं। ठीक है - देर हो रही है। देर हो रही है। शाहनी के कानों में जैसे यही गूँज रहा है - देर हो रही है - पर नहीं शाहनी रो-रो कर नहीं, शान से निकलेगी इस पुरखों के घर से, मान से लांघेगी यह देहरी, जिस पर एक दिन वह रानी बनकर आ खड़ी हुई थी। अपने लड़खड़ाते कदमों को संभालकर शाहनी ने दुपट्टे से आँखें पोंछी और ड्योढ़ी से बाहर हो गई।

(ग) गजाधर बाबू ने आहत, विस्मित दृष्टि से पत्नी को देखा। उनसे अपनी हैसियत छिपी न थी। उनकी पत्नी तंगी का अनुभव कर उसका उल्लेख करती, यह स्वाभाविक था, लेकिन उनमें सहानुभूति का पूर्ण अभाव गजाधर बाबू को बहुत खटका। उनसे यदि राय-बात हो जाती कि प्रबंध कैसे हो, तो उन्हें चिंता कम संतोष अधिक होता। लेकिन उनसे तो केवल शिकायत की जाती थी, जैसे परिवार की सब परेशानियों के लिए वही जिम्मेदार थे।

**अथवा**

मगर कोठरी में बैठने की देर थी कि आँखों में छल-छल आंसू बहने लगे. वह दुपट्टे से बार-बार उन्हें पोंछती, पर वह बार-बार उमड़ आते, जैसे बरसों का बाँध तोड़कर उमड़ आए हों। माँ ने बहुतेरा दिल को समझाया, हाथ जोड़े, भगवान् का नाम लिया, बेटे के चिरायु होने की प्रार्थना की। बार-बार आँखें बंद की, मगर आँसू बरसात के पानी की पानी की तरह जैसे थमने में ही न आते थे। आधी रात का वक्त होगा। मेहमान खाना खाकर एक-एक करके जा चुके थे। माँ दीवार से सटकर बैठी आँखें फाड़े दीवार को देखे जा रही थी। घर के वातावरण में तनाव ढीला पड़ चुका था।